(2) Revival of Political Theory

वर्तमान समय में मूल्यों की समाप्ति अथवा ऐतिहासिकवाद पर आधारित होने के कारण लोगों ने राजनीतिक सिद्धान्त के पतन की चाहे जितनी चर्चा की हो किन्तु दार्शनिक परम्परा से लगाव रखने वाले विद्वान आज भी इस तर्क को स्वीकार करने को तैयार नहीं है। किन्तु इसके पतन के विचार सिर्फ क्लासिक परम्परा पर ही लागू होता है न कि आधुनिक राजनीति विज्ञान पर। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद राजनीति सिद्धान्त के पूर्ण पतन की बात की गई, किन्तु ~~बर्लिन~~ बर्लिन, स्ट्रॉस आदि विद्वानों ने इस बात का खण्डन करते हुए यह दावा किया है कि राजनीतिक सिद्धान्त आज भी अस्तित्व में है।

बर्लिन ने अपनी प्रसिद्ध कृति "Does Political Science Still alive!" में राजनीति शास्त्र के पुर्नजीवन की विस्तृत चर्चा की है।

बर्लिन का मानना है कि समाज में हितों के आपसी संघर्ष से ही राजनीति का जन्म होता है। अतः यदि भावलवादी समाज में हितों का आपसी टकराव खत्म भी हो जाए तो उदारवादी व्यवस्था में कुछ नीतियां, मान्यताएं विश्वास ऐसे होते है जिनमें टकराव बना रहता है अतः वहाँ के समाज में राजनीति सिद्धान्तों का अस्तित्व भी बना रहता है।

बर्लिन ने व्यवहारवादियों की भी आलोचना करते हुए कहा है कि इन लोगों

लोगों ने मूल्यों के महत्व को समाप्त कर परम्परागत राजनीति के अस्तित्व को हानि पहुंचाई है। अतः बर्लिन इस प्रकार के लोगों को राजनीतिक दार्शनिक या समाज सिद्धान्तशास्त्री नहीं मानते हैं।

बर्लिन के अनुसार सभ्यता के आरम्भ से ही मनुष्य किसी न किसी प्राधिकरण के अधीन रहा है जिससे उनका आपनी हित में टकराव उत्पन्न होता है। अतः मनुष्यों द्वारा इन टकराव से मुक्ति एवं अपनी विवेकशीलता के कारण राजनीतिक सिद्धान्त का अस्तित्व हमेशा रहा है।

आलोचकों का मानना है कि काफी समय से इस क्षेत्र में किसी महान रचना का निर्माण नहीं हुआ है। किन्तु

"A Theory of Justice" 1971 में जॉन रॉल्स की कृति परम्परावाद के क्षेत्र में एक महान कृति है।

और ल्लाउडेल ने भी 'The Discipline of Politics' में क्लासिकी परम्परा का समर्थन किया है।

डॉ. जर्मिनो ने 1967 में प्रकाशित कृति '~~Beel~~ Beyond Ideology – The Revival of Political Theory' में राजनीतिक सिद्धान्त के पतन के दो कारण बतलाए हैं –

उनके अनुसार – प्रत्यक्षवाद ने राजनीति को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने के जुनून में मूल्यों को छोड़ दिया है। इसके साथ ही विभिन्न विचारधाराओं का जन्म जो मार्क्सवाद के रूप में उत्कर्ष पर पहुंचा, ने भी इसके पतन में सहयोग दिया।

किन्तु आज के सन्दर्भ में कई ऐसे राजनीतिक चिंतक हैं जिन्होंने इसके पुनरुत्थान पर बल दिया है। इन विचारकों में माइकेल ओकशॉट, रॉल्स, हर्बर्ट मार्क्यूज, मैकफर्सन आदि प्रमुख हैं।

उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है यह कि आज राजनीति शास्त्र अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत है। किन्तु इसका अस्तित्व तभी कायम रह सकता है जब अपने वैज्ञानिक स्वरूप के साथ-साथ मूल्यों के भी अस्तित्व को बनाए रखे।

1970 के दशक में राजनीति विज्ञान और राजनीति दर्शन के बीच का विवाद थोड़ा कम गया। विभिन्न विद्वानों ने मूल्यों एवं तथ्यों के आधार पर अपने सिद्धांतों को आधारित करने का प्रयास किया। ईस्टन ने 'उत्तर-व्यवहारवादी क्रान्ति' में सामाजिक विज्ञान के आधार पर सामाजिक पुनर्निर्माण कर सकते हैं।

राजनीतिक चिन्तन अर्थात अपने आप में मूल्यावान् है। प्लेटो, अरस्तु, प्लेटो, लॉक आदि विद्वानों की तर्क को देखते हुए इसके महत्व का पता चलता है।

'Political Theory Today' में डेविड हैल्ड ने भी राजनीतिक सिद्धान्त के महत्व की चर्चा की है। इसके अध्ययन ने हमें समकालीन राजनीतिक समुदायों की प्रकृति, उनके शक्ति केन्द्रों एवं परस्पर सम्बन्धों को समझने में मदद दी है।

राजनीतिक सिद्धान्तों के अध्ययन से हमें नई समस्याओं के समाधान में भी सहायता मिलती है। इसके अध्ययन से यह पता लगाना आसान हो जाता है कि अतीत में इन समस्याओं पर किस प्रकार विचार किया गया।

राजनीतिक दर्शन के द्वारा बनाए संकल्पना या तर्क आज भी सर्वमान्य है। उदाहरणस्वरूप अरस्तु ने दास-प्रथा का समर्थन करते हुए तर्क दिया कि केवल स्वतन्त्रजन ही सद्गुण की क्षमता रखते है। आज दास-प्रथा प्रचलित नहीं है किन्तु यह सामाजिक विषमता आज भी ज्वलंत समस्या बन कर उपस्थित है।

रूसो ने भी प्राकृतिक विषमता एवं परम्परागत विषमता के जो अंतर बताया उस आधार पर आज तर्कसंगत विश्लेषण सम्भव है।

काफी तर्कसंगत है। इस सम्बन्ध में कांट के विचार मनुष्य होने के की गरिमा से सम्पन्न है। उसे प्रत्येक व्यक्ति किसी सांसारिक मूल्य से नहीं तौला जा सकता है। रॉल्स ने भी मानव गरिमा के आधार पर ही अपना न्याय सिद्धान्त दिया है।

आलोचकों का कहना है कि आज के बदले संदर्भ में पुराने सिद्धान्त की आवश्यकता नहीं रह गई है। किन्तु यह आलोचना सही नहीं है क्योंकि यदि प्लेटो का काल्पनिक राज्य का सिद्धान्त यथार्थ से परे है तो लोकतन्त्र में राजनीतिज्ञों की जो चर्चा प्लेटो ने की है वो यथार्थ से एकदम नजदीक है। आज अरस्तु का दास-प्रथा भले ही अमान्य हो गया है किन्तु राज्य के अन्तर्गत उसका क्रांति विषयक सिद्धान्त एकदम प्रासंगिक है।

लॉक ने राज्य को एक trust के रूप में स्थापित करके संविधानवाद की जो व्याख्या की वो आज भी सराहनीय है।

हेगेल के Nation State के अन्तर्गत राजनीतिक दायित्व का सिद्धान्त सराहनीय है।

मार्क्स के बुर्जुआ समाज की आलोचना को मार्क्सवाद ने आज के सन्दर्भ में ढाला है।

आज राजनीति सिद्धान्त के महत्व को किसी भी तरह से नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। Politics शब्द यूनानियों की देन है। मध्ययुग में सामन्तवाद के अन्तर्गत सरकार पर चर्च का नियंत्रण था किन्तु आज स्थिति बदल चुकी है। शक्ति, प्रभुसत्ता, लोकतंत्र, जनहित आदि शब्दावली भी पुरानी परम्परा से जुड़ा हुआ है।

राजनीतिक सिद्धान्त का सम्बन्ध राजनीति विज्ञान एवं राजनीतिक दर्शन दोनों से है अतः समकालीन समस्या के विश्लेषण के लिए हमें आज भी राजनीतिक सिद्धान्तों से सहायता या प्रेरणा लेने की आवश्यकता पड़ती है। अतः इसकी उपयोगिता निर्विवाद है।